COMMON INTESTINAL WORMS
- ROUND WORM (ASCARIASIS)
- PIN WORM (ENTEROBIUS)

सामान्य आंत्र परजीवी
गोल-कृमि (एस्केरिस)
धागा-कृमि या सूचि-कृमि (इन्टरोबियस)

01613
1613

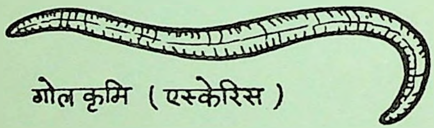

गोल कृमि (एस्केरिस)

एस्केरिस (गोलकृमि)

गोलकृमि आंत्र का प्रमुख परजीवी है।

गोलकृमि या एस्केरिस से होने वाली बीमारी को एस्केरियासिस कहते हैं।

बड़ों की अपेक्षा बच्चे इस रोग से सर्वाधिक प्रभावित होते हैं क्योंकि बच्चों में धूल से सने हाथों या अन्य गंदी वस्तुओं को मुंह में डाल लेने की बुरी आदत होती है।

गोलकृमि 20 से 30 सें.मी. लंबे, गोल आकार के कृमि होते हैं। इनका रंग सफेद या हल्का गुलाबी होता है। ये मोटी सेवई के समान होते हैं।

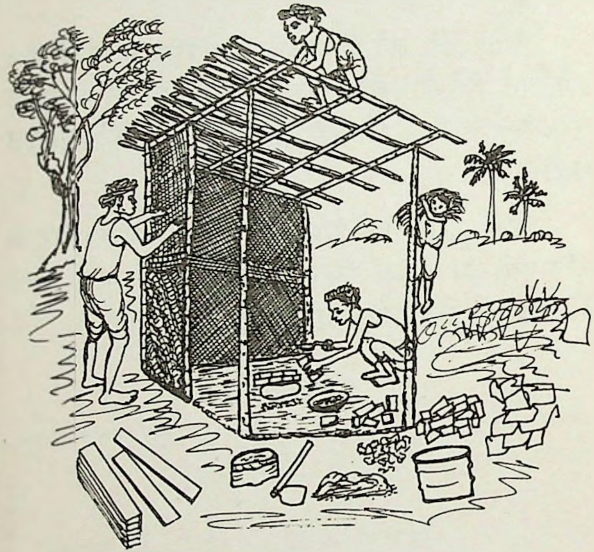

COMH 321

01613

COMMUNITY HEALTH CELL
326. V Main, I Block
Koramangala
Bangalore-560034
India

एस्केरियासिस का सम्बन्ध खराब स्वास्थ्य-व्यवस्था से है

जहां पर शौचालयों की व्यवस्था नहीं होती वहां पर व्यक्ति अपने घर के पिछवाड़े या पोखरों में कहीं भी मल-त्याग करते हैं। इस कारण गोलकृमि के अण्डे भूमि और पानी में मिल जाते हैं।

एस्केरियासिस रोग सामान्यत: गरीबों में होता है जो अपने लिए शौचालयों का निर्माण नहीं कर सकते। यह रोग उन लोगों में भी अधिक होता है जिन्हें स्वास्थ्य-व्यवस्था की जरुरत के बारे में जानकारी नहीं होती।

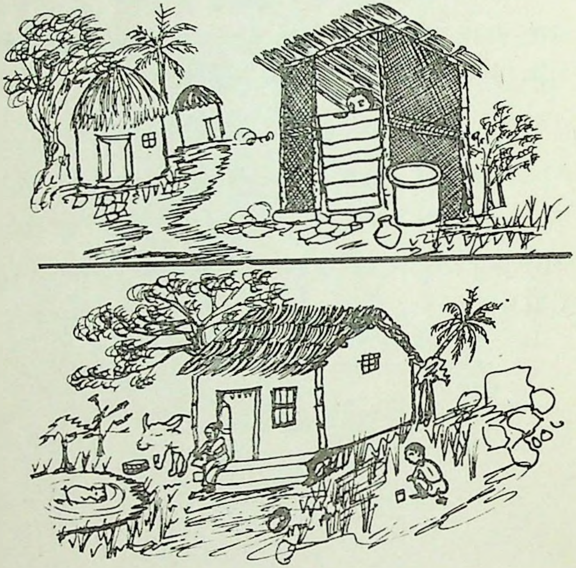

मल का समुचित विसर्जन

गांव के हर व्यक्ति से सहयोग पाना आसान नहीं है। बड़ों के साथ-साथ बच्चों का भी सहयोग पाना जरुरी है।

इसके लिए स्वास्थ्य-कार्यकर्ताओं का स्वास्थ्य-शिक्षकों एवं संयोजक के रुप में बहुमूल्य योगदान रहता है।

शौचालयों को बनाने के लिए लोगों को केवल शिक्षा देने से काम नहीं चलता बल्कि शौचालयों के समुचित उपयोग के बारे में भी जानकारी देना उतना ही आवश्यक है।

पूरे गांव में यदि एक भी व्यक्ति ठीक से शौच का विसर्जन नहीं करता को उससे पूरे समुदाय में आंत्र के परजीवी फैल सकते हैं।

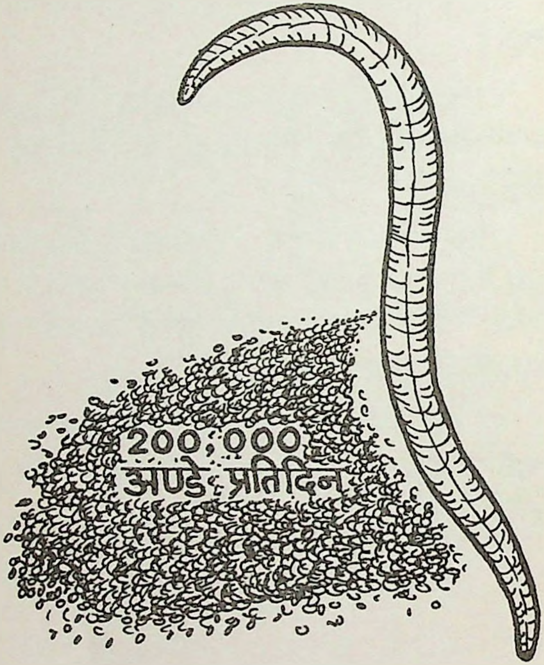

एस्केरियासिस कैसे फैलता है

एस्केरिस के अण्डे मल द्वारा बाहर आते हैं। ये अंडे वातावरण में फैल कर भूमि या पानी को दूषित कर सकते हैं। अंडे बहुत ही छोटे होते हैं जो आंख से दिखाई नहीं देते। ये अण्डे मिट्टी से सने हाथों, पैरों या जानवरों द्वारा एक जगह से दूसरी जगह तक चले जाते हैं।

यदि अण्डे पेट में चले जाएं तो ये आंत में परिपक्व होकर फूटते हें और छोटी आंत में वयस्क होते हैं। एक वयस्क कृमि 200,000 तक एक दिन में अंडे देता है।

खाद के रुप में मल का प्रयोग स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

कुछ जगहों पर शाक-सब्जी के खेतों में खाद के रुप में डालने के लिए मल इकट्ठा किया जाता है। ऐसा करना बहुत खतरनाक होता है क्योंकि मल में कई प्रकार के हानिकारक कीटाणु तथा परजीवी होते हैं।

इस कारण सब्जियों को कभी भी वैसे ही नहीं खाना चाहिए। उन्हें अच्छी तरह धोना तथा पकाना चाहिए।

किसानों को यह बताना चाहिए कि जब तक मल को सुखाकर खाद के रुप में बदला नहीं जाता तब तक उसे खाद के रुप सीधा इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। छः महीने तक मल को सुखाकर खाद बनाने से एस्केरिस के अण्डे मर जाते हैं।

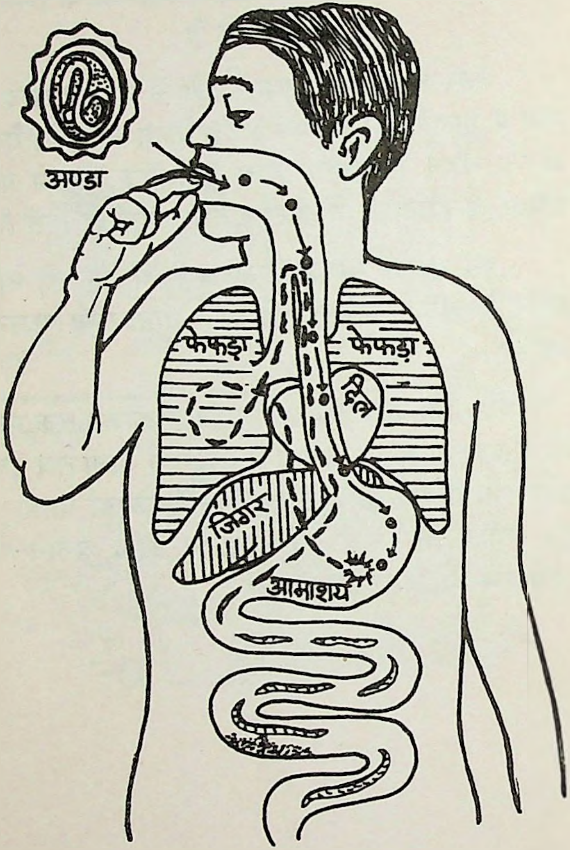

एस्केरिस का जीवन-चक्र

एस्केरिस या गोलकृमि के अण्डे मल द्वारा विसर्जित होते हैं। कभी गलती से ये अण्डे उस समय पेट में चले जाते हैं जब मिट्टी से सने हाथों या अन्य वस्तुओं को मुंह में रखा जाता है, जैसा कि बच्चे अक्सर करते हैं। बिना धोयी या बिना पकाई सब्जी में भी इसके अंडे हो सकते हैं।

जब अंडे पेट में पहुंच जाते हैं तब वे वहां पर फूटकर छोटे-छोटे लार्वा को जन्म देते हैं। ये लार्वा खून में मिलकर हृदय (दिल) के दाहिने भाग से होते हुए फेफड़ों में पहुंच जाते हैं। वहां से खांसी द्वारा ये फिर एक बार पेट में आते हैं और आंत में पहुंचकर बड़े होते हैं।

वयस्क या पूर्ण विकसित कृमि एक दिन में 200,000 तक अंडे देता है जो मल द्वारा बाहर निकलते रहते हैं। इस प्रकार इनका जीवन-चक्र पूरा होता है।

01613
COMH - 321

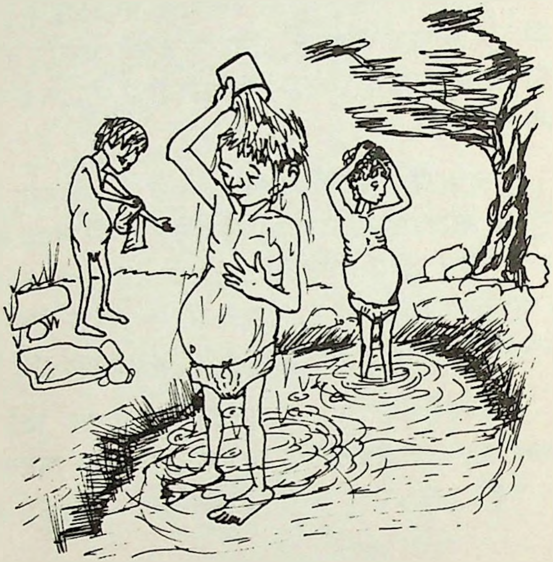

एस्केरियासिस के लक्षण

जिन बच्चों में ये कीडे बहुत अधिक होते हैं उनका पेट बहुत बड़ा और हाथ-पैर पतले होते हैं। ये बच्चे कुपोषण के शिकार होते हैं क्योंकि जो पोषक-तत्व इनके शरीर के विकास व वृद्धि के लिए जरूरी होते हैं उन्हें ये कीड़े खा लेते हैं।

लार्वा का फेफड़ों से गुजरते समय दमे की शिकायत हो सकती है।

समय-समय पर पेट में दर्द होना इस रोग का सामान्य लक्षण है।

जब रोगी को तेज बुखार या वह अत्यधिक बीमार होता है तब यह कृमि गति कर रहा होता है। यह कीड़ा ऊपर की ओर जाकर उल्टी (कै) द्वारा मुंह से बाहर निकलता है या नीचे जाकर मलद्वार से बाहर निकलता है।

इन कीड़ों का गेंद के रूप में गुच्छा आंत के रास्ते को बंद कर सकता है।

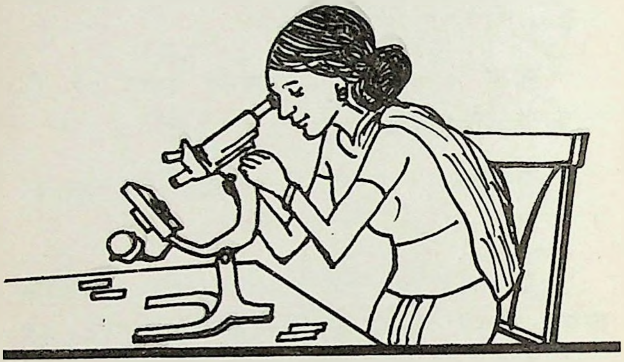

निदान

सूक्ष्मदर्शी यंत्र द्वारा एस्केरिस के अंडों को आसानी से देखा जा सकता है।

प्रयोगशाला में मल-परीक्षण की विधि आसान होती है जिसे स्वास्थ्य-कार्यकर्ता को आसानी से सिखाया जा सकता है।

जो बच्चा कुपोषित तथा बड़े पेट का दिखाई देता है और जिसे लगातार पेट का दर्द होता है, उसे रोगी माना जा सकता है।

आंत्र-परजीवी रोग गरीबों में अधिक होता है जिन्हें पीने के लिए सुरक्षित-साफ पानी नहीं मिलता और जिनके पास मल - निकासी की व्यवस्था ठीक नहीं होती।

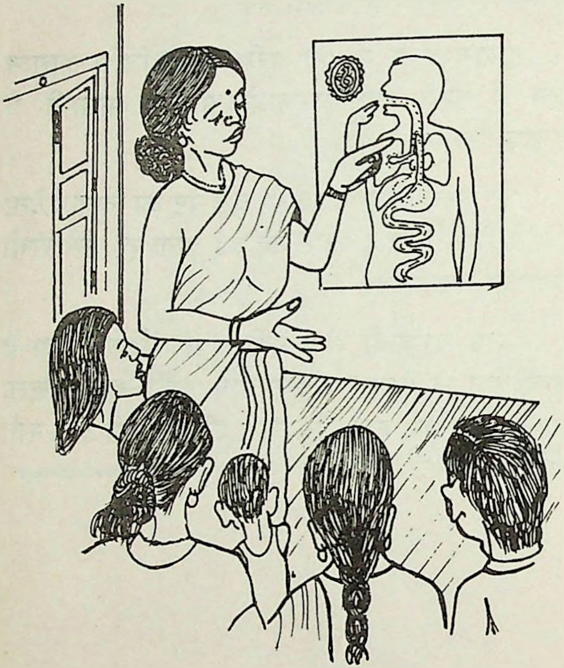

रोकथाम

एस्केरियासिस तथा अन्य आंत्र-परजीवी रोगों को रोकने के लिए मल-निकासी की समुचित व्यवस्था के साथ-साथ स्वास्थ्य-शिक्षा भी देना एक आवश्यक कदम है।

बच्चों को स्वास्थ्य-संबंधी अच्छी आदतों जैसे शौचालयों का ठीक ढंग से इस्तेमाल, भोजन से पहले और बाद में हाथ धोना आदि की जानकारी बहुत आवश्यक है। किसी भी गंदी वस्तु को मुंह में रखने से बच्चों को मना करना चाहिए।

मल को यदि ठीक ढंग से मिट्टी डालकर सुखाया नहीं गया हो तो उसे खाद के रूप में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

इलाज

पिपराजाइन की एक खुराक असरदार होती है।

पिपराज़ाइन 500 मि.ग्रा. की गोली और पीने वाली दवा के रुप में मिलती है जिसके एक चम्मच में 500 मि.ग्रा. दवा आती है। इस प्रकार एक चम्मच दवा एक गोली के बराबर होती है।

150 मि.ग्रा. प्रति किलो शारीरिक भार के बराबर हिसाब करके एक खुराक के लिए दवा की मात्रा निर्धारित करनी चाहिए।

एस्केरियासिस के लिए जड़ीबूटी की दवा

वयस्कों के लिए : पके पपीते के 8-10 बीज पीसकर दूध के साथ खाली पेट दें।

बच्चों के लिए : 3-4 बीज पीसकर दूध के साथ खाली पेट दें।

प्रश्न

1. बड़ों की अपेक्षा बच्चे एस्केरियासिस से क्यों अधिक प्रभावित होते हैं?
2. एस्केरियासिस के लक्षण क्या हैं?
3. एस्केरियासिस को आप प्रभावी रूप से किस प्रकार नियंत्रित कर सकते हो?

एस्केरियासिस का संबंध खराब स्वास्थ्य-व्यवस्था से है।

मल का उचित ढंग से विसर्जन करके ही एस्केरियासिस पर नियंत्रण किया जा सकता है।

01613
COMH 32
COMMUNITY HEALTH CELL
326, V Main, I Block
Koramangala
Bangalore-560034
India

धागा-कृमि या सूचि-कृमि
(इन्टरोबियस)

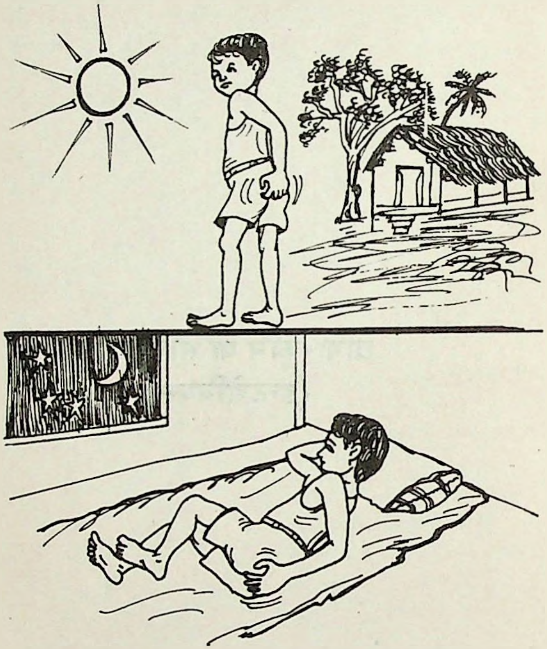

गुदा में खुजलाहट

जिस बच्चे की गुदा में खुजली हो और जिसमें रात में अधिक खुजलाहट होती हो तो यह बात पक्की तौर पर कही जा सकती है कि उसे इन्टरोबियस नामक आंत्र कृमि (कीड़ा) का रोग है।

गुदा में खुजलाहट वाले बच्चों की पहचान करना आसान है। विशेषकर रात में इन्हें गुदा को खुजलाते हुए अक्सर देखा जा सकता है।

इन्टरोबियस का दूसरा नाम धागा-कृमि है क्योंकि यह एक बारीक सफेद धागे के समान दिखाई देता है तथा एक और नाम सूचि-कृमि है क्योंकि ये 1 सें.मी. लंबे, सफेद रंग के सूचि या पिन के आकार के होते हैं।

सूचि - कृमि कैसे फैलते हैं

यह कीड़ा छोटी आंत के निचले हिस्से और बड़ी आंत में परिपक्व होता है। जब ये कीड़े अंडे देने योग्य हो जाते हैं तब मलाशय की ओर बढ़ते हैं और मलद्वार से बाहर निकलते हैं तथा मलद्वार के मुहाने पर हजारों की संख्या में अंडे देते हैं। अंडे अधिकतर रात में दिये जाते हैं, इसीलिए रात में खुजली अधिक होती है। इस स्थिति में नाखूनों से अधिक खुजलाया जाता है। ऐसा करने से अंडे नाखूनों के अंदर चिपक जाते हैं। जहां से ये भोजन करते समय पेट में चले जाते हैं। बिस्तर की चादरों, कपड़ों, भोजन और अन्य वस्तुओं में उपस्थित अंडे परिवार के दूसरे सदस्यों को भी प्रभावित कर सकते हैं। इस कारण एक ही परिवार के कई सदस्य इस रोग के शिकार हो जाते हैं। अण्डे पेट में जाने के बाद वे आमाशय तथा छोटी आंत में फूटते हैं। इनका पूरा जीवन-चक्र 3 से 6 सप्ताह का होता है

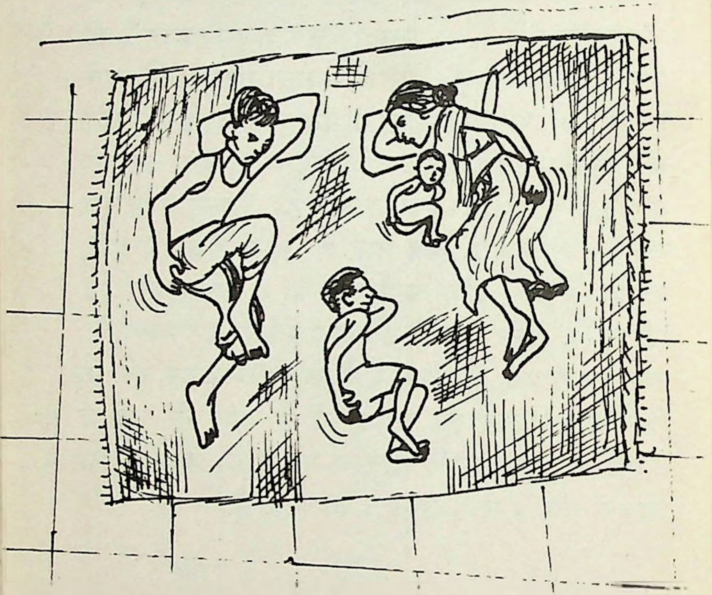

लक्षण

1. विशेषकर रात में मलद्वार (गुदा) में खुजली होती है।
2. खुजली के कारण नींद में बाधा होती है
3. गुदा तथा चूतड़ के आसपास खुजली से घाव हो जाते हैं।
4. एक परिवार में कई बच्चों और बड़ों को भी इस रोग से प्रभावित देखा जाना आम बात है।

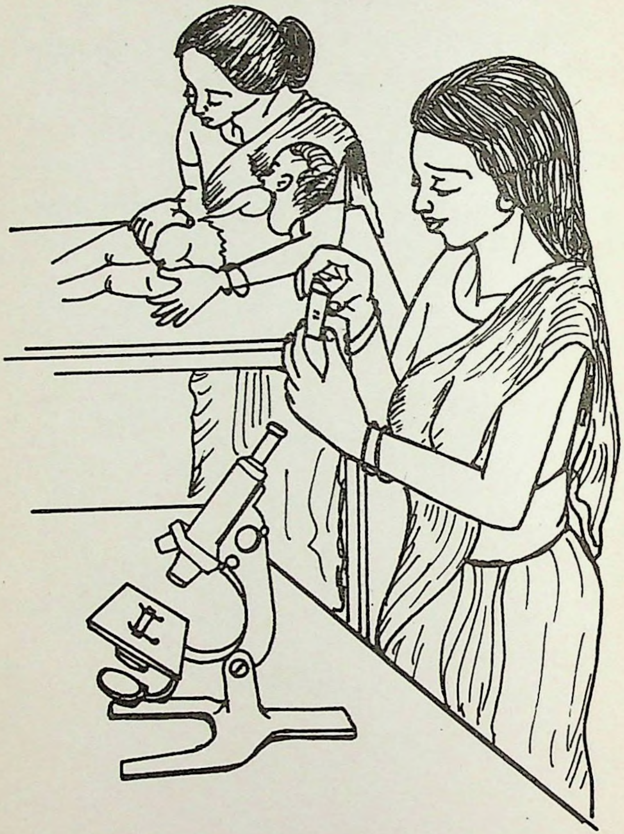

निदान

सुबह-सुबह पारदर्शी टेप का टुकड़ा गुदा पर लगा दें। उस टेप को कांच की स्लाइड पर चिपकाकर सूक्ष्मदर्शी यंत्र से उसकी जांच करें। इस विधि से अंडों को देखा जा सकता है।

लगातार अभयास करके एक स्वास्थ्य कार्यकर्ता एक अच्छा सूक्ष्मदर्शी - परीक्षक बन सकता है।

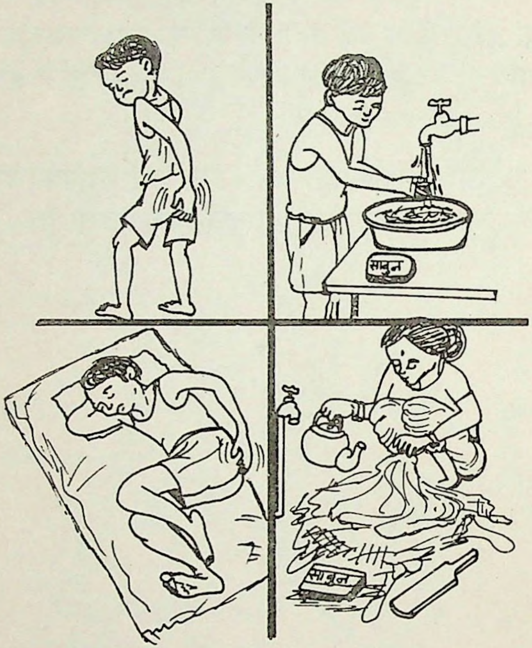

रोकथाम

सूचि-कृमि से प्रभावित बच्चों को रात के समय गुदा की खुजली से बचाव के लिए तंग चड्डियां पहनानी चाहिए।

बच्चों को सुबह उठने के बाद और हर शौच के बाद अपनी चूतड़, गुदा व हाथ अच्छी तरह धोने की शिक्षा देनी चाहिए।

स्वास्थ्य संबंधी व्यक्तिगत आदतों जैसे नहाने और हाथ धोने को बढ़ावा देना चाहिए। समय-समय पर नाखून काटें। साफ धोयी हुई चड्डियां, रात में पहनने के कपड़े तथा बिस्तर का प्रयोग करें।

कपड़ों तथा बिस्तर को गर्म पानी से धोकर उन्हें धूप में सुखाएं।

रोग के अधिक प्रसार को रोकने के लिए स्वास्थ्य-संबंधी शिक्षा दें।

मल के समुचित विसर्जन के बारे में शिक्षा दें। भीड़-भाड़ वाले इलाके से यह रोग एक से दूसरे में फैलता है।

रोग को एक से दूसरे में फैलने से रोकने के लिए परिवार के हर व्यक्ति का इलाज करें।

इलाज

खुजली से छुटकारा पाने के लिए गुदा आसपास वैसलीन या नारियल का तेल लगाएं।

खुजली से बचने के लिए जितना सहा जा सके उतने गर्म पानी के टब में 15-30 मिनट तक बैठें।

सबसे अच्छी दवा पिपराज़ाइन है जो 500 मि.ग्रा. की गोली या पीने वाली दवा के रूप में मिलती है, एक चम्मच में 500 मि.ग्रा. दवा होती है।

50 से 75 मि.ग्रा. प्रति किलो शारीरिक भार के अनुसार हिसाब लगाकर दवा की मात्रा तय करनी चाहिए। इस मात्रा को दिन में दो बार एक सप्ताह तक दें।

खुराक :

वयस्क – 2 गोलियां या 2 चम्मच दवा

बच्चे – 8 - 12 वर्ष : 1½ गोली या 1½ चम्मच

3 - 7 वर्ष : 1 गोली या 1 चम्मच

3 वर्ष से कम : ½ गोली या ½ चम्मच

सूचि-कृमि के लिए जड़ी-बूटी की दवा

खुजली से छुटकारा पाने के लिए: अरंडी के पत्तों का रस गुदा के चारों ओर लगाएं।

इलाज :

नीम के पत्ते पीसें और मटर के आकार की गोलियां बनाएं – इसे 7 दिनों तक रोज सुबह खाएं।

एक सप्ताह बाद इसे फिर दोहराएं।

1. नियोग-नियोगन

छः से आठ पके बीजों का प्रयोग करें।

सभी प्रकार के कीड़ों के लिए :

एलबेंडाजोल गोली 200 मि.ग्रा. या
एलबेंडाजोल पीने की दवा 200 मि.ग्रा./5 मि.ली.

बच्चों तथा बड़ों को एक-सी ही खुराक दें। या

2 गोलियां या 10 मि.ली. पीने की दवा को एक खुराक के रूप में दें।

गर्भावस्था में इसका प्रयोग न करें।

प्रश्न

1. सूचि-कृमि एक से दूसरे व्यक्ति में कैसे फैलते हैं?
2. सूचि-कृमि से पीड़ित व्यक्ति में कौन से सामान्य लक्षण मिलते हैं?
3. सूचि-कृमि के रोग के निदान की विधि बतलाइये।
4. सूचि-कृमि के रोग से बचाव के उपाय क्या हैं?

धागा - कृमि से बचाव का सबसे अच्छा उपाय स्वच्छता है।

इस श्रृंखला के शीर्षक

1. श्वासनली निमोनिया तथा निमोनिया
2. सामान्य आंत्र परजीवी
   (गोल-कृमि और सूचि-कृमि)
3. पोलियो, बाल पक्षाघात, पोलियोमैलिटिस
4. कान
5. आंखें
6. क्षयरोग तथा क्षयरोग की रोकथाम
7. दांत तथा मसूड़े
   दांतों की सामान्य देखभाल
8. कुष्ठरोग
9. त्वचा के सामान्य रोग
10. खुजली

Published by the Catholic Hospital Association of India,
157/6, Staff Road, Secunderabad-500 003.